Karva chauth katha in Hindi

प्रत्येक भारतीय हिन्दू विवाहित नारी के जीवन में करवा चौथ का अपना अलग ही महत्व है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार करवा चौथ का व्रत करने से पति की आयु बढ़ जाती है तथा हर संकट टल जाती है। हिन्दू धर्म के अनुसार जब भी किसी बहु का करवा चौथ रहता है तो उसकी सास उसे बहुत सारी सामग्री या करवा या सरघी भेंट देती है। हमारे देश में करवा चौथ व्रत बहुत धूम-धाम से मनाई जाती है और इस साल **24th October 2022**को करवा चौथ व्रत **2022**पड़ा है। तो, आइये जानते है चतुर्थी तिथि के अनुसार व्रत का समय:

चतुर्थी तिथि शुरू - **03:01 AM on Oct 24, 2022**
चतुर्थी तिथि समाप्त- **05:43 AM on Oct 25, 2022**

पर, करवा चौथ व्रत को करने के साथ-साथ इस व्रत की कथा को पढ़ना तथा सुनना भी बहुत ही जरुरी है। तो, आइये जानते है करवा चौथ कथा इन हिंदी:

एक साहूकार के एक पुत्री और सात पुत्र थे। करवा चौथ के दिन साहूकार की पत्नी, बेटी और बहुओं ने व्रत रखा। रात्रि को साहूकार के पुत्र भोजन करने लगे तो उन्होंने अपनी बहन से भोजन करने के लिए कहा।

बहन बोली- "भाई! अभी चन्द्रमा नहीं निकला है, उसके निकलने पर मै अर्घ्य देकर भोजन करूंगी।" इस पर भाइयों ने नगर से बाहर जाकर अग्नि जला दी और छलनी ले जाकर उसमें से प्रकाश दिखाते हुए बहन से कहा- "बहन! चन्द्रमा निकल आया है। अर्घ्य देकर भोजन कर लो।" बहन अपनी भाभियों को भी बुला लाई कि तुम भी चन्द्रमा को अर्घ्य दे लो, किन्तु वे अपने पतियों की करतूतें जानती थीं।

उन्होंने कहा- "बाईजी! अभी चन्द्रमा नहीं निकला है। तुम्हारे भाई चालाकी करते हुए अग्नि का प्रकाश छलनी से दिखा रहे हैं।

किन्तु बहन ने भाभियों की बात पर ध्यान नहीं दिया और भाइयों द्वारा दिखाए प्रकाश को ही अर्घ्य देकर भोजन कर लिया। इस प्रकार व्रत भंग होने से गणेश द्य

जी उससे रुष्ट हो गए। इसके बाद उसका पति सख्त बीमार हो गया और जो कुछ घर में था, उसकी बीमारी में लग गया। साहूकार की पुत्री को जब अपने दोष का पता लगा तो वह पश्चाताप से भर उठी।

गणेश जी से क्षमा प्रार्थना करने के बाद द्य उसने पुन: विधि-विधान से चतुर्थी का व्रत करना आरम्भ कर दिया। श्रद्धानुसार सबका आदर-सत्कार करते हुए, सबसे आशीर्वाद लेने में ही उसने मन को लगा दिया।
इस प्रकार उसके श्रद्धाभक्ति सहित कर्म को देख गणेश जी उस पर प्रसन्नहो गए। उन्होंने उसके पति को जीवनदान दे उसे बीमारी से मुक्त करने के पश्चात् धन-सम्पत्ति से युक्त कर दिया।

इस प्रकार जो कोई छल-कपट से रहित श्रद्धाभक्तिपूर्वक चतुर्थी का व्रत करेगा, वह सब प्रकार से सुखी होते हुए कष्ट-कंटकों से मुक्त हो जाएगा।

InstaAstro